Respective Stages of Economic growth
or
Rostow Stages of Economic growth

आर्थिक ~~विकास~~ संवृद्धि एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था को निम्न आर्थिक संवृद्धि से उच्चतम आर्थिक संवृद्धि की स्थिति में पहुंचाने हेतु निम्न अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। तब एक अल्पविकसित राष्ट्र विकासशील राष्ट्र बनता है और अन्त में विकसित राष्ट्र बन जाता है। इसे निम्न चित्र से प्रदर्शित किया जा सकता है -

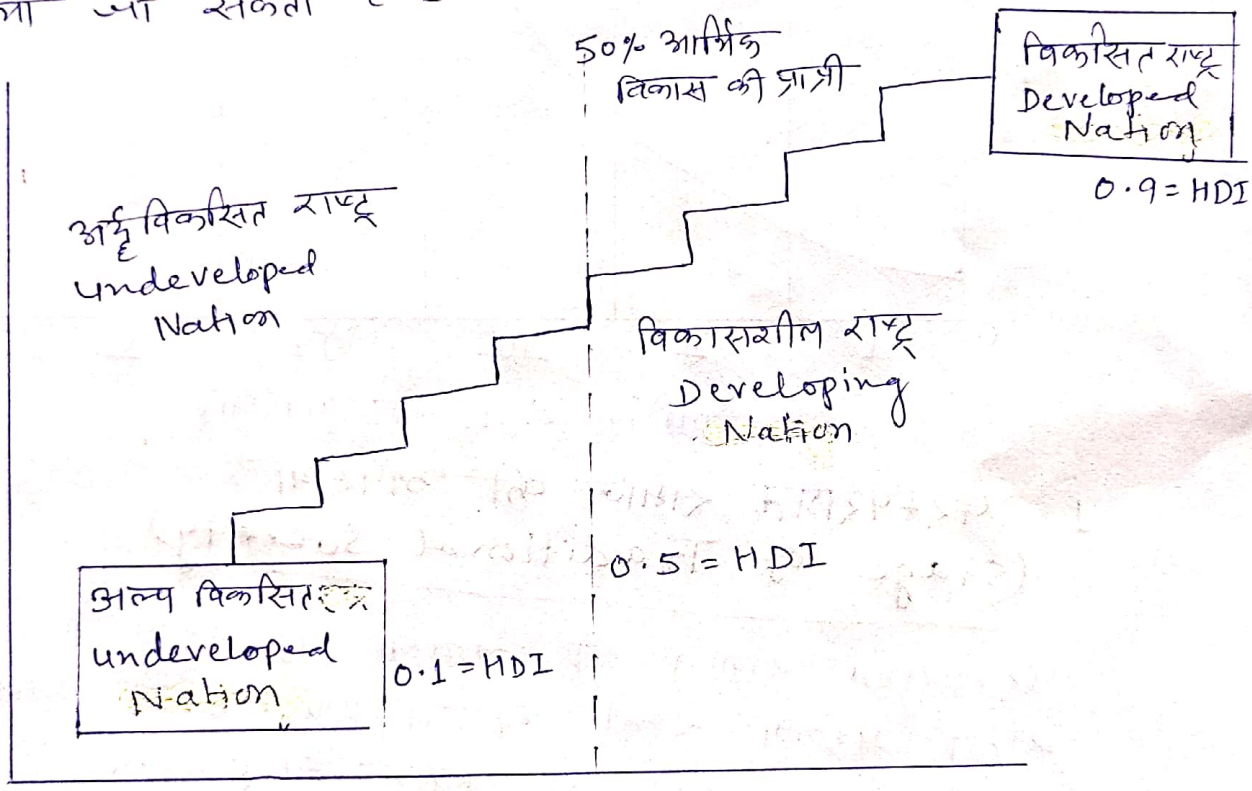

HDI = Human development Index

Rostow ने अपनी पुस्तक "The Stages of Economic growth" के अनुसार किसी भी राष्ट्र को अल्पविकसित से विकसित राष्ट्र बनने में निम्नलिखित पांच अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है।

1. परम्परागत समाज की अवस्था
2. उत्कर्ष के पूर्व की अवस्था
3. उत्कर्ष की अवस्था
4. परिपक्वता की ओर अग्रसर अवस्था
5. उच्चतम उपभोग स्तर की अवस्था

Scanned with CamScanner

इन पाँचों अवस्थाओं को निम्न चित्र द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है -

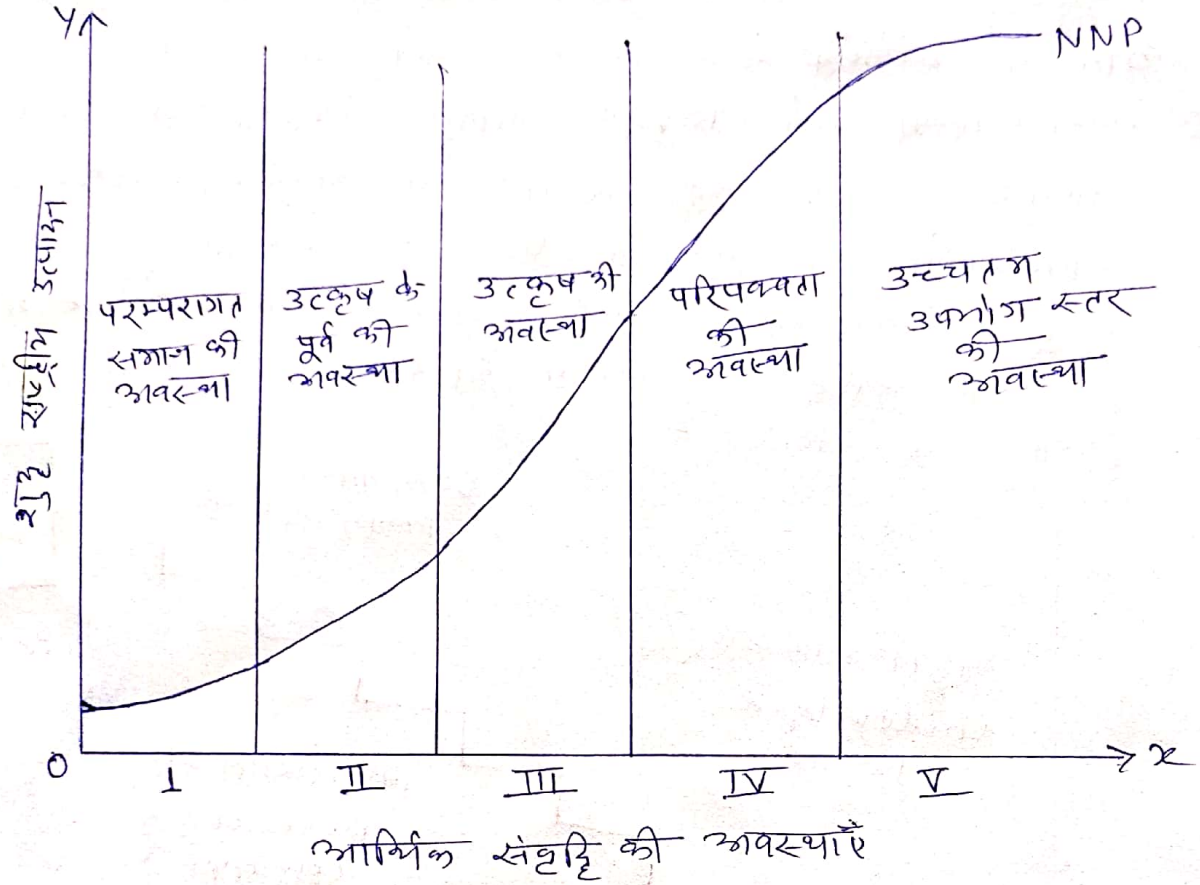

1. परम्परागत समाज की अवस्था (Stage of Traditional Society)

परम्परागत समाज की अवस्था वह है जिसमें उत्पादन की सहज प्रक्रिया रहती है। इस अवस्था में अविष्कार आदि का कोई प्रभाव नहीं रहता है। Rostow के अनुसार "परम्परागत समाज वह अवस्था है जिसके ढाँचे का विकास न्यूटन-पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर आधारित सीमित उत्पादन फलनों के ही भीतर होता है और जिसके भौतिक जगत के प्रति न्यूटन पूर्व मनोवृत्तियाँ रहती है"

इस अवस्था में लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि होता है। उत्पादन प्रणाली तथा सामाजिक जीवन पद्धति पुरातन एवं रूढ़िवादी होती है। उत्पादन के मुख्य स्त्रोत कृषि होने के कारण भूमि मालिकों के हाथ में आर्थिक एवं राजनीतिक शक्तियाँ केन्द्रित होती है। समाज का संगठन जातिप्रथा

Scanned with CamScanner

के आधार पर होता है। और आर्थिक व्यवसाय प्राथमिक होता है।

2. उत्कृष के पूर्व की अवस्था
Pre-take off stage

आर्थिक संवृद्धि की दूसरी अवस्था उत्कृष के पूर्व की होती है। इसे तैयारी की अवस्था भी कहा जाता है इस अवस्था में समाज के आर्थिक एवं राजनीतिक ढाँचे में परिवर्तन शुरू हो जाते हैं और समाज परम्परागत स्थिति से निकलकर नये युग में प्रवेश करने लगता है। यह अवस्था एक सौ वर्ष अथवा इससे कुछ अधिक वर्षों की रहती है। इस अवस्था में समाज को इतनी सुविधाएं मिलने लगती है कि वह उत्पादन में आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों तथा नये यन्त्रों एवं तरीकों का प्रयोग शुरू कर सके ताकि विकास की गति में तीव्रता आ जाए। इस अवस्था में भू-स्वामियों का महत्व घटने लगता है तथा औद्योगिक साहसी वर्ग का जन्म होता है। इन सब परिवर्तनों का परिणाम यह होता है कि समाज के आर्थिक ढाँचे की नींव मजबूत हो जाती है और वह अगले बड़े आर्थिक परिवर्तन के भोग्य हो जाती है।

3. उत्कृष की अवस्था
Take-off Stage

उत्कृष की अवस्था आर्थिक विकास की केन्द्रीय महत्व की अवस्था होती है। प्रायः यह बीस या तीस वर्षों की अवधि की होती है जिसके भीतर अर्थव्यवस्था अपने को इसप्रकार बदल देती है कि आगे उसका विकास स्वतः होने लगता है।

~~Rostow~~ Rostow के अनुसार उत्कृष अवस्था एक ऐसी बीच की अवस्था है जिसमें विनियोग की दर इस रूप में बढ़ जाती है कि प्रत्येक व्यक्ति के वास्तविक

Scanned with CamScanner

उत्पादन में वृद्धि होने लगती है और इस प्रारम्भिक वृद्धि के साथ उत्पादन की तकनीकी में क्रान्तिकारी परिवर्तन होने लगते है और इसप्रकार जो आय का प्रवाह शुरू होता है वह विनियोग के नये वातावरण को स्थापित करता है जिसके फलस्वरूप प्रति व्यक्ति उत्पादन में लगातार वृद्धि होने की प्रवृत्ति शुरू हो जाती है। इस अवस्था में

(a) राष्ट्रीय आय के साथ विनियोग के अनुपात में वृद्धि हो जाती है।

(b) छोटी अवधि में आर्थिक क्रान्ति का सृजन होता है।

(c) इस अवस्था में अर्थव्यवस्था आत्मचालित तथा आत्म संबलित (Self Sustaining) हो जाती है।

(d) इस अवस्था में अर्थव्यवस्था में प्रति व्यक्ति आय के उच्च स्तर को बनाए रखने के लिए प्रतिव्यक्ति उत्पादन में वृद्धि जनसंख्या वृद्धि से आगे बढ़नी चाहिए। Rostow के take off stage को निम्न चित्र से प्रदर्शित किया जा सकता है -

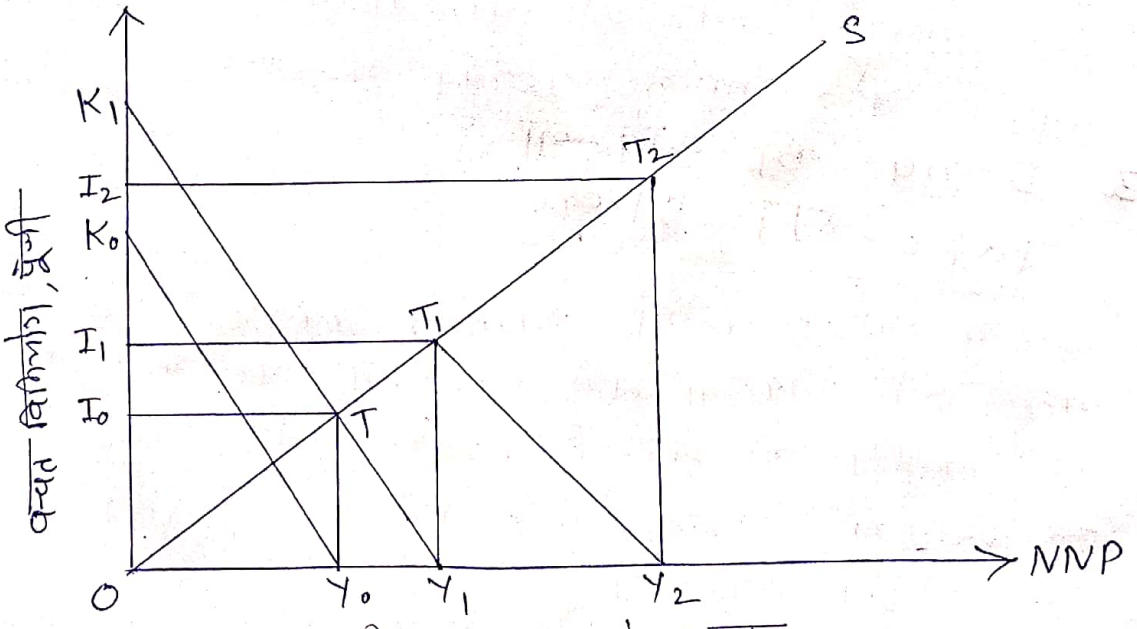

उपयुक्त चित्र में OX अक्ष पर NNP तथा OY अक्ष पर ~~वास्तविक~~ शुद्ध निवेश एवं बचत की मात्रा है। S बचत वक्र है।

Scanned with CamScanner

में लाए और वृद्धि को outgoing character प्रदान करे। इसप्रकार Take off Stage में अर्थव्यवस्था में प्रति व्यक्ति आय को अधिक ऊँचे स्तर को बनाए रखने के लिए प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि जनसंख्या की वृद्धि से आगे बढ़नी चाहिए।

4. परिपक्वता की ओर अग्रसर की अवस्था
Drive to Maturity Stage

Rostow के अनुसार उत्कर्ष अवस्था के बाद आर्थिक विकास की एक ऐसी अवस्था आती है जिसे परिपक्वता की ओर अग्रसर का नाम दिया जाता है। इस अवस्था में समाज अपने अधिकांश उद्योगों एवं आर्थिक क्रियाओं में आधुनिक प्रविधियों का प्रयोग कर देते है। इस अवस्था में जनसंख्या वृद्धि उत्पादन वृद्धि से कम होती है और अर्थव्यवस्था अप्रत्याशित झटके सहन कर सकती है।

5. अत्यधिक उपभोग की अवस्था
High Mass Consumption Stage

Rostow के अनुसार आर्थिक संवृद्धि की अन्तिम अवस्था चरम उत्कर्ष की अवस्था होती है जिसमें देश का जन समुदाय उत्पादन की अपेक्षा मांग और उपभोग में अधिक रुचि लेने लगता है। इस अवस्था में विलासिता तथा आराम की वस्तुओं का उपभोग बढ़ जाता है। राष्ट्र अपनी शक्ति में इतनी वृद्धि कर लेता है कि वह न केवल अपनी सुरक्षा में पूर्ण हो जाता है बल्कि दूसरे राष्ट्रों को भी अपनी अधीनता में रखने का इच्छुक हो जाता है तथा राष्ट्र की आर्थिक नीति कल्याणकारी राज्य के स्वरूप को दर्शाता है। राष्ट्र में व्यक्तिगत

Scanned with CamScanner

K_0Y_0 तथा K_1Y_1 पूंजी-उत्पादन-अनुपात वक्र है। चित्र में

$\frac{OK_0}{OY_0} = \frac{OK_1}{OY_1}$ अर्थात् पूंजी-उत्पादन-अनुपात स्थिर है।

$\frac{TY_0}{Y_0Y_1}$ सीमांत पूंजी-उत्पादन-अनुपात है

आरम्भ में आत्म स्फूर्ति की पूर्व की अवस्था में समग्र का बचत वक्र बहुत चपटा होता है और पूंजी-उत्पादन-अनुपात वक्र बहुत तिरछा। इसका अर्थ है कि लोग अपनी आय में से कुछ नहीं बचाते और पूंजी-उत्पादन अनुपात बहुत अधिक होता है। शुरुआत में जब OI_0 विनियोग किया जाता है तो यह पूंजी स्टॉक को बढ़ाता है जो कुछ समय बाद उत्पादक बन जाता है और राष्ट्रीय आय को OY_1 तक बढ़ा देता है। Take off stage में जब $OI_1 = Y_1T_1$ और भी अधिक विनियोग होता है तो उत्पादक पूंजी की वृद्धि तेजी के साथ करता है जिससे पूंजी-उत्पादन अनुपात घटकर T_1Y_1/Y_1Y_2 पर आ जाता है। इससे विनियोग वक्र का ढांचा बदलता है और पूंजी-उत्पादन-अनुपात वक्र अधिक चपटा होकर T_1Y_2 हो जाता है। राष्ट्रीय आय बढ़कर OY_2 हो जाता है जो विनियोग को और बढ़ाकर $OI_2 = Y_2T_2$ पर ले जाता है। इसप्रकार अर्थव्यवस्था में आत्म स्फूर्ति की अवस्था उत्पन्न हो जाती है और यदि विकास का यह क्रम जारी रहे तो अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर हो जाती है।

Rostow के अनुसार, Take off stage की निम्नलिखित शर्तें होती है -

ⓐ उत्पादक निवेश-दर को राष्ट्रीय आय या शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन के 5% को बढ़ाकर 10% से अधिक करना।

ⓑ वृद्धि की ऊँची दर वाले एक या अधिक महत्वपूर्ण निर्माणकारी क्षेत्रों का विकास।

ⓒ ऐसे राजनैतिक, सामाजिक तथा संस्थात्मक ढाँचे का निर्माण करना जो आधुनिक क्षेत्र में विस्तार की प्रवृत्ति का काम

Scanned with CamScanner

उपभोग से अधिक सामाजिक उपभोग तथा व्यक्तिगत कल्याण से अधिक सम्पूर्ण समाज के कल्याण को महत्व दिया जाने लगता है। अत्याधिक उपभोग की अवस्था में समाज का ध्यान पूर्ति की अपेक्षा मांग पर, उत्पादन की समस्याओं की अपेक्षा उपभोग तथा कल्याण की समस्याओं पर अधिक बढ़ जाता है। इसप्रकार आर्थिक संवृद्धि की इन अवस्थाओं में उत्कृष की अवस्था जितनी कम अवधि में आ जाये उतने ही कम अवधि में चरम उत्कर्ष की आर्थिक विकास की अवस्था आयेगी तथा विकासशील विकासशील से विकसित राष्ट्र की श्रेणी में अर्थव्यवस्था आ जायेगी। आर्थिक विकास की इस अवस्था की निम्न विशेषताएं होती है—

① अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर एवं स्वयं संचालित हो चुकी होती है। प्रगति की उत्प्रेरक शक्तियों का भरपूर विस्तार होता है।

② गरीबी का दुष्चक्र पूरी तरह से तोड़ दिया जाता है और आर्थिक विकास को बाधाओं पर काबू पा लिया जाता है जिससे वंचित संभव हो जाता है।

③ कृषि क्षेत्र में जनसंख्या का प्रतिशत 75 से घटकर 35% के करीब रह जाता है।

④ Innovation अर्थव्यवस्था की एक स्थायी विशेषता बन जाती है।

⑤ आधारभूत उद्योगों की स्थापना हो चुकी होती है इससे औद्योगिक उत्पादन तेजी से बढ़ता है।

⑥ विनियोग की दर 10% से अधिक हो जाती है। यह जनसंख्या की वृद्धि दर से अवश्य ही अधिक होती है। जिससे प्रतिव्यक्ति आय में भी वृद्धि होती है।

Scanned with CamScanner

(7) पूंजी निर्माण में वृद्धि, शासन व्यवस्था का फैलाव, आयात - निर्यात के स्वरूप में परिवर्तन, विदेशी पूंजी का अधिक मात्रा में संचय इस अवस्था की विशेषताएँ है।

(8) इस प्रकार इस अवस्था में राष्ट्रीय भावना का विकास हो चुका होता है जो देश की सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थागत एवं राजनैतिक तत्वों के स्वरूप को बदल देता है।

——×——

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics
Maharaja College

Scanned with CamScanner